भाकृअनुप – केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान
श्री गंगानगर राजमार्ग, बीछवाल, बीकानेर-334 006 (राज)
ICAR-CENTRAL INSTITUTE FOR ARID HORTICULTURE
Sri Ganganagar Highway, Beechwal-BIKANER-334 006

"खेत बचाओ अभियान" एक राष्ट्रव्यापी अभियान

दिनांक: 15.06.2026

आज दिनाक 15.06.2026 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा चलाए जा रहे ***"खेत बचाओ अभियान"*** पर राष्ट्रव्यापी अभियान के तहत भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर द्वारा नोरंगदेसर एवं गुसाईसर में कार्यक्रम आयोजित किये गए, जिनमे **"खेत बचाओ अभियान** के अंतर्गत उर्वरकों का संतुलित उपयोग, प्राकृतिक खेती, सरकारी योजनाओं का लाभ एवं वैज्ञानिक सलाह, जागरूकता आदि पर विस्तृत रूप से चर्चा की। इस अवसर पर, संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. धुरेन्द्र सिंह, डॉ.डी.के. समादिया, डॉ. एस आर मीना तथा डॉ. रमेश कुमार ने विभिन्न बागवानी फसलों में संतुलित खाद एवं उर्वरकों का फसलों मे उपयोग, प्राकृतिक खेती, एकीकृत पौष्टिक प्रबंधन द्वारा मिट्टी की उर्वरता और उत्पादकता बनाए रखने मे किसानों से विस्तृत रूप से चर्चा की। कार्यक्रम के शुरुआत में डॉ. एस आर मीना ने सभी आगंतुक किसानों का स्वागत करते हुये **खेती बचाओ अभियान** के अंतर्गत आने वाले विभिन्न आयामों के महत्व के बारे में विस्तृत रूप से चर्चा की। उन्होने किसानों से अनुरोध किया कि अपने फ़सलोत्पादन में संतुलित उर्वरकों के उपयोग पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया व प्राकृतिक खेती व जैविक खेती को अपनाने की सलाह दी। कार्यक्रम में बातचीत करते हुये डॉ. धुरेन्द्र सिंह ने किसानों को विभिन्न बागवानी फसलों में जैव-उर्वरक उपयोग करने की सलाह दी जिससे मिट्टी की उर्वरता बढ़े। इस अवसर पर उन्होने बागवानी फसलों की मूल्य संवर्धन के बारे में बताते हुये खेत में संतुलित उर्वरक प्रबंधन, समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन द्वारा मिट्टी की सेहत की आवश्यकता की उपयोगिता पर जोर दिया।

इसी प्रकार **खेती बचाओ अभियान** के तहत डॉ. डी.के. समादिया, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. धुरेन्द्र सिंह तथा डॉ. एस आर मीना ने संस्थान की दूसरी टीम ने खेत बचाओ अभियान के तहत गुसाईसर गाँव में किसानों को उर्वरकों का संतुलित उपयोग, प्राकृतिक खेती, सरकारी योजनाओं का लाभ एवं वैज्ञानिक सलाह, जागरूकता आदि पर विस्तृत रूप से चर्चा की संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. डी.के. समादिया ने बागवानी फसलें जैसे सब्जी वाली फसले काचरी, काकड़िया, ग्वारफली, खेजरी की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होने बागवानी फसलों की उन्नत किस्मों के महत्व एवं सही पोषण व्यवस्था पर जागरूक होने पर ज़ोर दिया। उन्होने स्थानीय संसाधनों का उचित उपयोग करके पौष्टिक खाद्य पदार्थ का उत्पादन किया जा सकता हैं। इसके साथ ही संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. रमेश कुमार ने बागवाने फसलों जैसे बीलपत्र एवं नींबू वर्गीय फसलों पर जैविक और प्राकृतिक खेती की सलाह डी गई की खेती एवं मौसम की विपरीत परिस्थितियों की समस्याओं का समाधान के बारे में बताया। उन्होने बागवानी फसलों में बूंद-बूंद सिंचाई के साथ उचित मात्रा में फर्टिगेशन करने की सलाह दी।